दसवे इमाम - अलीउन नक़ी (अलै.)

शहीद ज़हर दिलो ज़ाने फात्मा ज़हरा
दहुम इमाम अलीउन नक़ी शहे वाला

शहीद इमाम महोम्मद तक़ी हुए थे जब
तो छः बरस के मदीने में थे इमामे हुदा

किया तलब मुतव्विकिल ने भेज कर नामे
गए इराक़ तो फिर शाहे दीं को क़ैद किया

रहे हिरासते शाही में बारह साल मगर
रही इताअतो तबलीग़े हक़ की फिक्र सदा

थे बहरे इल्म का फैज़ अज़ इराक ताबा अजम
हर एक सिमत से आते थे इलम के जोया

ख़िलाफ गुजरी जो हज़रत की शोहरते इलमी
तो शाहे वक़्त को अब्बासियों ने भड़काया

जब आ गया मुतवक्कील को मौत का पैग़ाम
तो सल्तनत में बहुत सख़्त इन्क़िलाब हुआ

तो आया तख़्ते ख़िलाफत पा मोतज़िल मलऊन
तो ज़हर इसने इमामे ज़मन को दिलवाया

था साल हिज़री वह दो सौ पचास ब चार ऐ 'फिक्र'
दो शमबा तीसरी माहे रजब को हशर हुआ